कथा सरिता

सहिष्णुता जरूरी

चीन के सम्राट का प्रधानमंत्री वृद्ध हो जाने के बाद सेवानिवृत्त हो गया। उसका परिवार बहुत बड़ा था। सम्राट ने सोचा, प्रधानमंत्री ने दीर्घकाल तक राज्य को अपनी सेवाएं दी हैं। आज भी वे अपने विशाल परिवार को एकसूत्र में बांधे हैं। ऐसे अनुभवी आदमी से मिलना चाहिए। वे स्वयं चलकर प्रधानमंत्री के निवास पर पहुंचे। सम्राट को प्रधानमंत्री के भवन के विशाल प्रांगण को देखकर आश्चर्य हुआ। तो प्रधानमंत्री ने कहा, राजन! परिवार बड़ा है। एक हजार सदस्य हैं। यह प्रांगण उनके एक साथ बैठकर भोजन करने के लिए है। राजा ने घूम-घूमकर पूरे भवन का अवलोकन किया। बहुत बड़ी रसोई, उसी के अनुपात में बर्तन भंडार, सब सदस्यों के शयनकक्ष। सम्राट प्रधानमंत्री के परिवार की व्यवस्था को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। सम्राट ने कहा, प्रधानमंत्रीजी! आपके इतने बड़े परिवार की एकता का राज क्या है? मैं कारण जानना चाहता हूँ। वृद्ध प्रधानमंत्री सम्राट की बात सुनकर कुछ क्षण तक मौन रहा। कुछ क्षण बाद उसने अपने एक पुत्र को कागज और पेंसिल लाने का संकेत किया। कागज आ गया तो उसने लिखना शुरू किया। पन्ना पूरा लिख डालने के बाद उसे सम्राट के हाथ में दे दिया। सम्राट ने उसे पढ़ा। पूरे पन्ने में एक शब्द 'सहिष्णुता' को सौ बार दोहराया गया था। दूसरा कोई अक्षर नहीं था। प्रधानमंत्री ने धीरे से कहा, सम्राट! हमारे परिवार के शांतिपूर्ण सहवास का कारण है सहिष्णुता। मेरे परिवार का हर सदस्य एक-दूसरे को सहन करना जानता है। उस व्यक्ति का संवास सुखद होता है जो दूसरे को सहन करना जानता है।

खुशहाली के मित्र

राजा हर्षवर्द्धन के राज्य में प्रजा बहुत प्रसन्न और संतुष्ट थी। दूसरी तरफ उनके पड़ोसी राजा रणविजय की प्रजा बहुत दु:खी थी। वहां आए दिन झगड़े होते रहते थे। रणविजय ने बहुत प्रयास किए पर प्रजा में असंतोष बढ़ता जा रहा था। वहां कभी किसी तरह का तनाव नहीं होता था। रणविजय ने जब राजा हर्षवर्द्धन के बारे में सुना तो उसकी प्रजा की खुशहाली का राज जानने के लिए उसके पास पहुंचा। हर्षवर्द्धन ने पहले पड़ोसी राजा रणविजय की खूब आवभगत की फिर उससे आने का कारण पूछा तो वह बोला, मेरे राज्य में हर ओर त्राहि-त्राहि मची हुई है। लोग दु:खी और बेहाल हैं। मुझे भी अपने राज्य की सुख-शांति का राज बताएं ताकि मेरा राज्य भी खुशहाल हो सके। राजा रणविजय की बात सुनकर हर्षवर्द्धन बोला, मेरे चार मित्र हैं, जो प्रजा को खुशहाल रखने में मेरी मदद करते हैं। रणविजय बोला, आपके वे मित्र क्या मेरी मदद नहीं कर सकते? कौन हैं वे? हर्षवर्द्धन ने जवाब दिया, मेरा पहला मित्र है सत्य। यह मुझे असत्य बोलने से रोकता है। दूसरा प्रेम है, जो मुझे सबसे प्रेम करने की सलाह देता है और कभी किसी से घृणा नहीं करने देता। तीसरा मित्र है, न्याय। यह मुझे अन्याय नहीं करने देता और मेरे आंख-कान हमेशा खुले रखता है ताकि मैं राज्य में होने वाली हर घटना पर अपनी नजर बनाए रखूं। और मेरा चौथा मित्र त्याग है। मेरा यह मित्र मुझमें त्याग की भावना बनाए रखने के साथ ही मुझे स्वार्थ व ईर्ष्या से बचाता है। इस तरह ये चारों मिलकर मेरे राज्य की रक्षा करते हैं। राजा रणविजय के चेहरे पर प्रसन्नता के भाव थे। उसे राजा हर्षवर्द्धन की सफलता का राज समझ में आ गया था। वह जब वापस अपने राज्य जाने लगा तो राजा हर्षवर्द्धन ने उसे भेंट देकर विदा

चार सलाह

एक नगर में लक्खी नामक व्यापारी रहता था। अपना अंत समय नजदीक आया जानकर उसने अपने चारों बेटों को बुलाकर चार सीख दी और कहा, तुम इन सीखों पर चलोगे तो कभी दु:खी नहीं रहना पड़ेगा और व्यापार भी दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करेगा। हर गांव घर बनाना, छया में आना छाया में जाना, कर्ज दिया पैसा वापस आने की आस मत रखना, सलाह की जरूरत पड़े तो तिमुंडा-तिगोडा से लेना। पिता की बात को शिरोधार्य कर बेटों ने चलना शुरु किया। गांव-गांव में घर बनाने शुरु कर दिए, घर से दुकान और दुकान से घर छाया में आने के लिए छप्पर लगा दिए, दुकान से जिसको भी कर्ज देते, उससे पैसे वापस नहीं मांगते। तीनों बातों पर चलने का नतीजा यह निकला कि चारों भाइयों पर कर्जा चढ़ गया। सभी आलसी हो गए और व्यापार चौपट हो गया। चारों सोचते कि पिताजी ने हमारी ऐसी दुर्दशा करने वाली बातें क्यों बताई, अब रही आखिरी बात, उसे भी आजमा कर देख लेते हैं। लेकिन 'तिमुंडा तिगोडा' यानी तीर सिर और तीन गोडे वाला आदमी कहां ढूंढे। आखिरकार किसी ने बताया कि तिमुंडा तिगोडा का मतलब होता है - वृद्ध आदमी, जिसका माथा बुढ़ापे के कारण झुक गया हो और धुटनों में आ गया हो और इसलिए तीन सिर की तरह दिखाई देता हो और लाठी जिसका तीसरा पांव या गोडा हो। वे गांव के सबसे वृद्ध व्यक्ति के पास गए। उसने कहा कि तुम पिता की बात का मतलब ही नहीं समझे। पहली बात का मतलब था कि अपने व्यवहार से गांव वालों के दिल में अपना घर बनाओ। दूसरी बात थी कि सूरज उगने से पहले दुकान जाओ और सांझ ढलने के बाद आओ। तीसरी बात का मतलब था कि किसी को कर्ज दो तो उसकी कोई चीज अपने पास रख कर कर्ज दो, ऐसे में रुपया दोगे और वापिस नहीं आयेगा तो परेशानी नहीं होगी और चौथी बात का मतलब था कि सलाह किसी अनुभव व्यक्ति से ही लो। चारों बेटों ने बात के अर्थ समझकर व्यवहार किया और फिर से पहले की तरह धनी-मानी बन गए।

चार साथी

एक व्यापारी था। उसकी चार पत्नियां थी। वह अपनी चौथी पत्नी को बहुत प्यार करता। और उसकी हर इच्छा पूरी करता। अपनी तीसरी पत्नी को वह अपने मित्रों से बड़े गर्व से उसे मिलाता। लेकिन व्यापारी को डर था कि कहीं वह उसे छोड़ नहीं जाएं। अपनी दोनों पत्नियों की तरह ही उसे अपनी दूसरी पत्नी से भी बहुत लगाव था। जब भी व्यापारी को कोई समस्या होती वह अपनी दूसरी पत्नी की ओर ही देखता था। वह उसकी पूरी मदद करती थी और मुसीबत से बाहर भी निकाल लेती थी। लेकिन व्यापारी अपनी पहली पत्नी को बिल्कुल नहीं चाहता था, जबकि वह उसके प्रति पूरी तरह समर्पित थी। मुश्किल के दिनों में उसने व्यापारी का बहुत साथ दिया। एक दिन व्यापारी बीमार पड़ गया। और पूरी जिंदगी के बारे में सोचा और खुद से कहा, पूरी जिंदगी मेरे साथ चार पत्नियां रहीं। लेकिन मैं मरूंगा तो अकेला ही! उसने अपनी चौथी पत्नी से पूछा, मैं तुम्हें सबसे ज्यादा प्यार करता हूँ, अब जब मैं मरने वाला हूँ तो क्या मेरे साथ चलोगी? चौथी पत्नी ने साफ मना कर दिया। व्यापारी को उसकी यह बात चुभ गई। दु:खी मन से उसने यही बात अपनी तीसरी पत्नी से पूछी, क्या तुम मेरे साथ चलोगी? तीसरी बीबी ने कहा, कभी नहीं, यहां मैं बहुत सुखी हूँ। तुम्हारे मरने के बाद मैं दोबारा शादी कर लूंगी। यह सुनकर व्यापारी का दिल बैठ गया और वह बिल्कुल ठण्डा पड़ गया। उसने अपनी दूसरी पत्नी से कहा, मैंने जरूरत के वक्त हमेशा तुम्हें याद किया और तुमने हमेशा ही मेरी मदद की है। आज मैं तुमसे दोबारा मदद चाहता हूँ। जब मैं मर जाऊंगा तो क्या तुम मेरे साथ ऊपर चलोगी मेरा साथ देने के लिए? पत्नी ने जवाब दिया, मुझे माफ कर दो इस बार मैं तुम्हारी मदद नहीं कर पाऊंगी। मैं तुम्हारा साथ केवल मरने तक दे सकती हूँ। यह सुनकर तो व्यापारी पूरी तरह से टूट गया। तभी एक आवाज आई, मैं चलूंगी तुम्हारे साथ। व्यापारी ने सिर उठाकर देखा तो सामने उसकी पहली पत्नी खड़ी थी। वह बहुत दुबली हो गई थी। उसे देखकर व्यापारी को बहुत दु:ख हुआ उसने कहा, मुझे तुम्हारा ध्यान सबसे ज्यादा रखना चाहिए था।

दरअसल हमारी जिंदगी में चार पत्नियां हैं। चौथी पत्नी हमारा शरीर है। हम चाहे इसे सुंदर और स्वस्थ बनाने में कितना ही समय क्यों न लगाएं लेकिन मरते ही यह हमें छोड़ देता है। तीसरी पत्नी हमारी सम्पत्ति है। जब हम मरते हैं तो यह दूसरों की हो जाती है। दूसरी पत्नी हमारा परिवार और हमारे दोस्त हैं। हमारे जीवनकाल में चाहे ये कितने ही नजदीक क्यों न हो लेकिन दुनिया छोड़ने के बाद वे केवल श्मशान तक ही साथ जाते हैं। पहली बीबी है हमारी आत्मा। इसे हम दौलत और झूठी शान की खातिर नजरअंदाज कर देते हैं। जबकि यही हमारे साथ हमेशा रहती है चाहे हम कहीं भी जाएं।

अच्छा यही है कि समय रहते हम इसकी कद्र करना सीख लें नहीं तो मरते वक्त हमें इस बात का दु:ख रहेगा।

नगरधन, नागपुर। नवनिर्मित भवन का उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीए संचालिका ब्र.कु.पुष्पारानी, ब्र.कु.कुसुम, नगरपरिषद अध्यक्षा माधुरी ऊईके, जिला परिषद वर्षा धोपटे तथा अन्य।

करूर। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ.डी.चंद्रशेखरण, एस.एम.सैय्यद इब्राहिम हाशनी, एन.रविचंद्रण, ब्र.कु.कलावती।

कोल्हापुर। 'शाश्वत् यौगिक खेती' कार्यक्रम में मंचासीन हैं पी.जी.मेढे, अरूण डुंगले, ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.राजु, ब्र.कु.किरण तथा अन्य।

रांजणी, अम्बाजोगाई। दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष बी.बी.ठोंबरेजी, चिंचोलीकर, ब्र.कु.राजु, ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.महानंदा तथा अन्य।

वसंत विहार, दिल्ली। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ए.एन.तलवार, अभिलाषा शर्मा, संत नारायण, ब्र.कु.शिवानी, ब्र.कु.कासिरा तथा अन्य।

तनाव प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण देने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु.गिरिजा, ब्र.कु.पीयूष एवं समस्त प्रतिभागी।